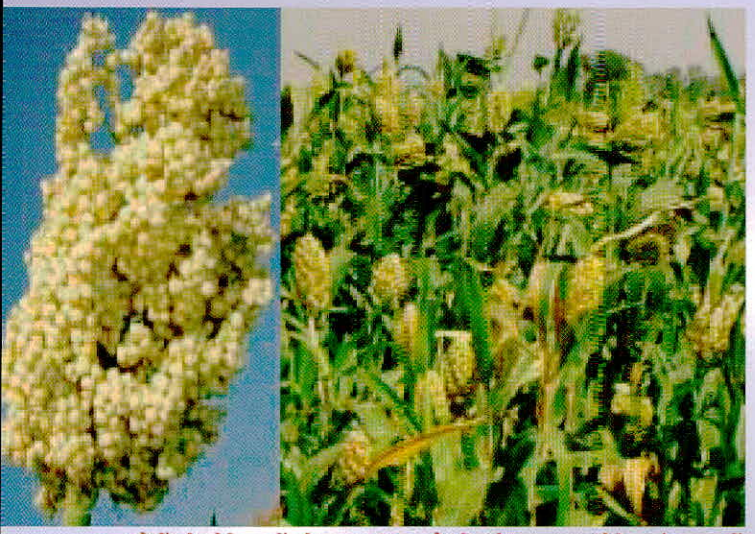

जल पौधों की कोशिकाओं को फुलाकर रखता है, जिसके फलस्वरूप कोशिकाएं आकार में वृद्धि करके फसलों के पकने के समय में वृद्धि कर सकती हैं

2. जौ

- **पहली सिंचाई** : कल्ले फूटने के समय अर्थात् बीज बोने के 30-35 दिन बाद।
- **दूसरी सिंचाई** : दुग्धावस्था में सिंचाई करें।

3. सब्जी

आलू

पहली सिंचाई बीज बोने के 3-5 दिन बाद करें। बाद की सिंचाइयां भूमि की किस्म के अनुसार 8-15 दिन के अन्तराल पर करें। सिंचाई सदैव हल्की करें, ताकि डौलियां पानी में न डूबें।

जलवायु, भूमि की किस्म और आलू की किस्मों के अनुसार आलू की फसल अवधि में 5-10 सिंचाइयों की आवश्यकता होती है।

4. दलहनी फसलें

चना

- **पहली सिंचाई** : बीज बोने के 45-60 दिन बाद, फूल आने से पूर्व करें।
- **दूसरी सिंचाई** : फलियों में दाने बनने के समय करें। यदि जाड़ों में वर्षा हो जाए, तो दूसरी सिंचाई न करें।

नोट : फूल आने पर सिंचाई न करें अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि हो जायेगी।

मटर

- **पहली सिंचाई** : फूल आने के समय पर सिंचाई करें।
- **दूसरी सिंचाई** : दाने भरते समय एक सिंचाई करनी चाहिए। ऐसा करने से अधिक उपज मिलती है।

मसूर

- **पहली सिंचाई** : फूल आने के समय सिंचाई करनी चाहिए।
- **दूसरी सिंचाई** : फलियों के निर्माण के समय सिंचाई करनी चाहिए। यदि इस अवस्था में शरद कालीन वर्षा हो जाए तो सिंचाई करने की आवश्यकता नहीं है।

5. तिलहन

राई/सरसों : इन फसलों को फसल अवधि में 25-30 सेमी. पानी की आवश्यकता होती है और केवल 2-3 सिंचाई पर्याप्त होती हैं।

- **पहली सिंचाई** : फूल आने की अवस्था में बोने के 40-45 दिन बाद करें।
- **दूसरी सिंचाई** : फली निर्माण की अवस्था में बोने के 80-85 दिन बाद करें।
- **तीसरी सिंचाई** : फलियों में दाने भरने की अवस्था में बोने के 105-110 दिन बाद करें।

ध्यान देने योग्य बातें

- जलवायु, भूमि एवं फसल मांग के अनुसार ही सिंचाई करनी चाहिए।
- कम जल मांग वाली उन्नत किस्मों का चयन करना चाहिए।
- चयनित फसलों में उनकी क्रान्तिक अवस्था में ही सिंचाई करनी चाहिए।
- फसलों को खरपतवारों से मुक्त रखें।
- सिंचाई हेतु उपलब्ध जल को अधिक से अधिक क्षेत्र की सिंचाई हेतु उपयोग करें।
- सिंचाई हेतु जल की उपलब्धता के अनुरूप फसलों का चयन करें, ताकि जल का सदुपयोग करके अधिक उत्पादन प्राप्त हो सके।
- यदि जल कम मात्रा में उपलब्ध हो तो उसके सदुपयोग हेतु बौछारी या ड्रिप सिंचाई का उपयोग करें।
- सिंचाई द्वारा दिए गए जल को फसलों के जड़ क्षेत्र में अधिकतम समय तक नमी रखने हेतु संरक्षण के उपाय करें।
- नहरों से सिंचाई करते समय कुलाबों से उतना ही पानी छोड़ें जितना नाली में सुगमता से बह सके।
- जल संसाधन से खेत तक जल ले जाने हेतु नालियों की निगरानी रखें।

संपर्क करें :
श्री गंगाशरण सैनी
कृषि-बागवानी सलाहकार
5.ई-9.बी, बंगला प्लाट
फरीदाबाद-121001 (हरियाणा)

मुझे इंसाफ चाहिए

मैं वतन का भाल हूं, मुझे इंसाफ चाहिए।
मेरे गहरे ज़ख्मों पर, मरहम आप लगाइए।।
सदियों से रहा हूं रक्षक, वतन की सीमाओं का।
हिमालय है नाम मेरा, मुझे वरदान चाहिए।।
कच्ची मिट्टी से बना हूं, पत्थर हैं साथ मेरे।
वृक्षों की जड़ों की ताकत, फौलाद बनाती मुझे।।
बर्फ समेट कर सीने पर, जल-धाराओं को लाता हूं।
प्रकृति का रक्षक हूं, सबको खुशहाल बनाता हूं।।

परंतु जब से मेरे सीने पर, आरी तुमने चलाई है।
मुझे नंगा कर डाला, बारूदी सुरंग बिछाई है।।
मेरी मज़बूती ढह गई, पिकनिक स्पॉट बनाने से।
मर्यादा भी भंग हुई, विकार लीला रचाने से।।
खोया गौरव लौटाने को, मुझ पर रहम खाइए।
मैं वतन का भाल हूं, मुझे इंसाफ चाहिए।।
मेरे सीने को चीरकर, जल प्रलय जब आई थी।
मिट्टी पत्थर बहाकर मेरे, तबाही कुदरत ने मचाई थी।।

हज़ारों ज़िन्दगियां खत्म हो गईं, वीरान गांव, शहर हो गए।
कुछ वहशी दरिन्दों ने, तब भी लूट मचाई थी।।
लेकिन खड़ा रहा मैं, अपने कर्तव्य पथ पर।
प्राण हज़ारों बचाए मैंने, अपने शिखर पर आसरा देकर।।
मैं भक्षक नहीं रक्षक हूं, यह सम्मान चाहिए।
मैं वतन का भाल हूं, मुझे इंसाफ चाहिए।।

संपर्क करें :
डॉ. श्रीगोपालनारसन
पो.बो. 81, 1043, गीतांजलि विहार, गणेशपुर रूड़की, उत्तराखण्ड